यात्रा-वृत्तांत

उद्देश्य —

यात्रा-वृत्तांत के बारे में जानकारी प्राप्त करना
यात्रा-वृत्तांत की विशेषताओं से परिचित होना
यात्रा-वृत्तांत की अन्य विधाओं से भिन्नता के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

यात्रा-साहित्य मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि करता है। लेखक अपनी यात्रा कृतियों द्वारा देश-विदेश के दृश्यों और रीति रिवाज आदि से गहरा परिचय करवाता है। साथ ही इससे मनोरंजन भी होता है। यात्रा वृत्तांत मनोरंजन और ज्ञानार्जन के अतिरिक्त कल्पनाओं को यात्रा के लिए प्रेरित भी करता है। दरअसल, अनेक ऐसे सांसारिक अनुभव हैं जो बिना यात्रा के अर्जित नहीं किये जा सकते। इसलिए यात्रा वृत्तांतों को लिखने की परम्परा चल रही है। इसके अध्ययन से पाठक घर बैठे लेखक के अर्जित ज्ञान का अनुभव करता है।

मनुष्य ने अभिव्यक्ति के लिए नए-नए रूपों की तलाश की। रूप की इसी तलाश और प्रयोग से आधुनिक गद्य की अनेक विधाओं का जन्म हुआ। कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक के अलावा आत्मकथा, जीवनी, डायरी, संस्मरण, रिपोर्ताज, भेंटवार्ता, व्यंग्य जैसी अनेक विधाओं का विकास हुआ। यात्रा वृत्तांत भी इन्हीं में से एक है। जिसमें मनुष्य के भोगे हुए यात्रा के अनुभव को कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है। यहाँ कल्पना के लिए ज्यादा गुंजाइश नहीं होती। इसमें बीते हुए यथार्थ का वर्णन होता है। यात्रा के दौरान जिन व्यक्तियों से मुलाकात होती है उनका चित्रण स्वाभाविक रूप में होता है। यात्रा में स्थान बदलने की क्रिया महत्वपूर्ण होती है। यात्रा के अनेक कारण हो सकते हैं। कभी जीविकोपार्जन के लिए तो कभी शैक्षणिक दृष्टि से ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियों से अवगत होने के लिए उचित एवं

ब्रजकिशोर नारायण हृदयनंदन के लंदन, प्रभाकर द्विवेदी हेल पार उतरी मेरे आंखें, डॉ. रघुवंश हरी घाटी तथा धर्मवीर भारती विशेष मेरे यूरोप की आदि रचनाएं काफी चर्चित रही हैं। शुरुआती दौर में यात्रा-वृत्तांत स्वभावतः परिचयात्मक और स्थूल वर्णन प्रधान थे। विदेश जाने वाले यात्री पानी के जहाज का ऐसा वर्णन करते थे मानो किसी राजमहल का हाल बता रहे हों। उनके वर्णन के केन्द्र में ही कौतूहल, उत्साह और उछाह रहता था। फलस्वरूप उनकी दृष्टि आकारों पर इतनी अधिक थी कि अंतरंग प्रायः उपेक्षित हो जाता था। भारतेन्दु ने अपने यात्रा संस्मरण बहुत ही रोचक शैली में लिखे लेकिन उन्हें निबंध के रूप में ही मान्यता प्राप्त हुई। मौलवी महेश प्रसाद का ग्रंथ मेरी ईरान यात्रा सरल भाषा और आत्मीय शैली में लिखी गई है। शुरू के लेखकों के विषय का मोह और महत्त्व अधिक था। विदेश यात्राएँ प्रायः यात्रा वृत्तांत का आधार बनती थीं। [illegible] ने सरस्वती में कई छोटे लेख-वृत्त प्रकाशित किये।

हिन्दी लेखकों में राहुल सांकृत्यायन ने यात्रा-वृत्तांतों में इतिहास, भूगोल, समाज एवं संस्कृति की अंदरूनी तहों तक पहुँचने [illegible] की कोशिश की है, हालांकि उनकी शैली में इतिवृत्तात्मकता अधिक है। वर्तमान यात्राओं के इन दृश्यों, स्थितियों और उनसे जुड़े अनुकूल प्रतिकूल लेखक की मानसिक प्रतिक्रियाओं के साथ-साथ परिचित होते चलते हैं। इसलिए लेखक की रुचि, संस्कार, संवेदनशीलता और मानसिकता के अनुरूप यात्रा-वृत्तांतों का स्वरूप भी अलग-अलग ढल जाता है।

पिछले पच्चीस-तीस वर्षों में हिन्दी का यात्रा-साहित्य काफी समृद्ध हुआ है। इधर बहुत से साहित्यकारों को जैसे-जैसे ~~[illegible]~~ विदेश यात्रा का अधिक से अधिक मौका मिला है यात्रा वृत्तांत में उसी ~~[illegible]~~ अनुपात में वृद्धि होती गई है। [illegible], कमलेश्वर, विष्णु प्रभाकर और रामदरश मिश्र

प्रमुख यात्रा-वृत्तांत — भारतेंदुकालीन यात्रा-वृत्तांतों में कुछ, जिनका उल्लेख होता है उनमें दामोदर शास्त्री का 'मेरी दक्षिण दिशा की यात्रा' (1885) देवीप्रसाद खत्री का 'रामेश्वर यात्रा' (1893) और 'बद्रिकाश्रम यात्रा' (1900), शिवप्रसाद गुप्त का 'पृथ्वी प्रदक्षिणा' (1914), स्वामी सत्यदेव परिव्राजक का 'मेरी कैलाश यात्रा' (1915) और 'मेरी जर्मन यात्रा' (1926), कन्हैयालाल मिश्र का 'हमारी जापान यात्रा' (1931) और रामनारायण मिश्र का 'यूरोप यात्रा के छः मास' (1932)। इन यात्रा-वृत्तांतों के माध्यम से हिंदी में जनता के विकसित होते हुए मानसिक क्षितिज का संकेत मिलता है। मध्यकालीन रूढ़ियों एवं रीतियों से प्रभावित पंडित मंडली का समुद्रयात्रा विरोध जगजाहिर है किंतु इन संस्कारों से मुक्त होकर जिन विद्वान यात्रियों ने यूरोप समेत अन्य देशों की यात्राएँ कीं वह विशिष्ट रूप से उनकी उदारता, साहसिकता और ज्ञान के प्रति उनकी ललक का परिचायक है। शिक्षा के विकास और यातायात के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ यात्रा के प्रति लोगों का रुझान भी बढ़ता गया। हिंदी के कुछ लेखकों के ऐसे भी नाम शामिल हैं जिन्हें जन्मजात सैलानी प्रवृत्ति के आधार पर कहा जाता है। राहुल सांकृत्यायन, रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल, अज्ञेय, भगवतशरण उपाध्याय, दिनकर, नागार्जुन ~~और ...~~ जैसे नाम यायावरी के क्षेत्र में काफी मशहूर हैं। इन्होंने यात्रा-साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

घुमक्कड़शास्त्र, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा, किन्नर देश में, रूस में 25 मास (राहुल सांकृत्यायन), पैरों में पंख बाँधकर, उड़ते-उड़ते चलो (रामवृक्ष बेनीपुरी), लोहे की दीवार के दोनों ओर (यशपाल), अरे यायावर याद रहेगा, एक बूँद सहसा उछली (अज्ञेय), कलकत्ता से पेकिंग, सागर की लहरों पर (भगवतशरण उपाध्याय), देश-विदेश (दिनकर), गोरी नज़रों में हम (प्रभाकर माचवे) यात्रा-साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। आखिरी चट्टान तक, परवर्ती लेखकों में मोहन राकेश का

स्थान से दूसरे स्थान का चक्कर लगाता रहा है। प्रकृति के सुन्दर-मनोहारी रूप ने भी मनुष्य को अपनी ओर खींचा। फलतः उसने नदियों, पहाड़ों और जंगलों की ओर रुख किया। प्रकृति से जुड़ना भी मनुष्य की जिज्ञासा का ही परिणाम है। प्रकृति की सुन्दर छवि को निहारने के लिए वह दुर्गम स्थलों की यात्रा पर निकल पड़ा। जीवन के बदलते स्वरूप ने भी यात्रा को बढ़ावा दिया। सांस्कृतिक आदान-प्रदान और राजनीतिक कार्यों के लिए मनुष्य को इधर-उधर जाना पड़ा। समय के साथ-साथ यात्रा-वृत्तांत में भी परिवर्तन हुआ। शुरू में इसे साहित्यिक विधा के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। लेकिन आज यह साहित्य की महत्वपूर्ण विधा बन गई और आलोचकों का ध्यान खींचने में भी सफल सिद्ध हुई।

यूँ तो मनुष्य अनादि काल से यात्राएँ करता आ रहा है अपने संपर्क में आने वाले को वह इन यात्राओं के बारे में निश्चित रूप से सुनाता रहा होगा किंतु भारतीय साहित्य में यात्रा वृतांत लिखने की कोई सुदीर्घ परंपरा नहीं मिलती। आधुनिक साहित्य में ही इसका सूत्रपात हुआ। हिंदी में यात्रा-वृतांत लिखने की शुरुआत भारतेंदु युग से मानी जा सकती है। 'सरयू पार की यात्रा', 'मेंहदावल की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा' आदि शीर्षकों से लिखे गये यात्रा-वृत्तांतों में भारतेंदु ने बहुत ही सजीव और रोचक वर्णन किया है। किन्तु तब आलोचकों ने इन यात्रा-वृत्तांतों को निबंध के अंदर समाविष्ट कर लिया था क्योंकि यात्रा-साहित्य के रूप में कोई स्वतंत्र विधा विद्यमान नहीं थी। लेकिन भारतेंदु के बाद यात्रा-वृत्तांत की अखंड परम्परा चल पड़ी और आज यह एक समृद्ध गद्य विधा के रूप दिखाई पड़ रही है।

के नाम यात्रा-वृत्तांत के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। रूसी सफरनामा (बलराज साहनी), खंडित यात्राएं (कमलेश्वर), ज्योतिपुंज हिमालय (विष्णु प्रभाकर), और बना हुआ इंद्रधनुष (रामदरश मिश्र) आदि इस विधा की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ मानी जा सकती हैं। यात्रा-वृत्तांत लेखक के साथ सहयात्रा करते हुए पाठक कहीं कविता, कहीं संस्मरण, कहीं कहानी तो कहीं चित्र-दर्शन का अनुभव करता चलता है। कमलेश्वर विष्णु प्रभाकर और रामदरश मिश्र के यात्रा-वृत्तांतों में कथा रस का पूरा आनंद मिलता है। आज के यात्रा वृत्तांत में वस्तु वर्णन, दृश्यांकन बिम्बविधान और मनःस्थिति रेखांकन की क्षमता बढ़ गई है। देश-विदेश की सांस्कृतिक उपलब्धियों का साक्षात्कार इनके माध्यम से आसानी से किया जा सकता है।

डॉ कविश्री जायसवाल
असि॰ प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एन॰ ए॰ एस॰ कॉलेज
मेरठ
मो॰ 9412365513
Kavishreejaiswal01@gmail.com